MODEL ANS. KEY

❖ **निम्न प्रश्नों का उत्तर 15-15 शब्दों में दें।**

1. नीतिशास्त्र की परिभाषा दीजिये।

उत्तर– नीतिशास्त्र वह आदर्शमूलक विज्ञान है जो समाज निवसित मनुष्यों के ऐच्छिक कर्मों का निष्पक्ष दृष्टि से मूल्यांकन कर उनके संदर्भ में उचितानुचित निर्णय प्रस्तुत कर आचरण मानवाचरण हेतु कुछ सार्वभौमिक नियमों की स्थापना करता है।

2. क्या नीतिशास्त्र एक व्यावहारिक विज्ञान है?

उत्तर– हाँ, यह आंशिक व्यावहारिक विज्ञान है क्योंकि यह मानवाचरण के सार्वभौमिक नियमों एवम् सिद्धान्तों से परिचित करवाकर मानव के जीवन को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

3. चरित्र से क्या तात्पर्य है?

उत्तर– मानव व्यक्तित्व का स्थायी मनोवृत्तियों, नैतिक मूल्यों एवम् संकल्पों द्वारा निर्मित पक्ष को ही चरित्र कहा जाता है।

4. नैतिक मूल्यबोधक निर्णय किसे कहते हैं?

उत्तर– इन नैतिक निर्णयों के माध्यम से व्यक्ति के चरित्र का मूल्यांकन किया जाता है। इसका संबंध व्यक्ति की इच्छाओं, आकांक्षाओं एवम् प्रयोजनों से होता है।

5. क्या मनुष्य को समाज में रहने के लिए नीतिशास्त्र को जानना आवश्यक है?

उत्तर– हाँ, क्योंकि समाजनिवसित प्रत्येक व्यक्ति के कर्म एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, अत: प्रत्येक व्यक्ति के कर्म नीतिगत ढंग से होने चाहिये। इसके लिए जरूरी हैं कि उसे नैतिक सिद्धान्तों का ज्ञान हो।

6. क्या नीतिशास्त्र हमें नैतिक बनना सिखाता है?

उत्तर– नीतिशास्त्र एक आदर्शमूलक मूल्यात्मक विज्ञान है जो आंशिक सैद्धांतिक एवम् आंशिक व्यावहारिक है। आदर्शमूलक विज्ञान होने के नाते नीतिशास्त्र ऐच्छिक कर्मो का मूल्यांकन कर कुछ आदर्शो एवम् सिद्धान्तों की स्थापना करता है। इन स्थापित सिद्धान्तों का प्रमुख उद्देश्य है कि मानव इन्हें अपने जीवन में उतारे और कर्म करे। जब व्यक्ति इन्हें अपने जीवन में उतारता है तो वह अवश्य ही नैतिक बनता है। इस प्रकार नीतिशास्त्र हमें सामान्य नैतिक मूल्यों एवम् आदर्शो का ज्ञान प्रदान कर हमारी नैतिकता की पृष्ठभूमि तैयार करता है।

7. प्लेटो के अनुसार न्याय विधिगत है अथवा नीतिगत है?

उत्तर– न्याय या डिकेयोसिन नीतिगत है क्योंकि यह मानवात्मा के गुणों में सामंजस्य से उत्पन्न होता है जो व्यक्ति को नैतिक बनाता है।

8. नैतिकता के पालन हेतु Bentham कौन–कौन से दबाव मानते है?

उत्तर– नैतिकता के पालन हेतु Bentham चार दबाव मानते है– भौतिक, सामाजिक, कानूनी तथा धार्मिक दबाव।

9. कर्त्तव्य के लिए कर्त्तव्य (Duty for Duty) क्या है?

उत्तर– काण्ट के अनुसार व्यक्ति को अंत:अभिप्रेरित नैतिकता से युक्त हो हमेशा निष्ठापूर्वक अपने लिए नियत कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए, उसके फल या परिणाम से पूर्णतया विरक्त रहना चाहिए।

10. सापेक्ष व निरपेक्ष आदेश में मूल अन्तर बताइए।

उत्तर– सापेक्ष आदेश परिणाममूलक तथा इच्छा, भावनाओं से युक्त होते है जबकि निरपेक्ष आदेश में परिणामनिरपेक्ष विशुद्ध कर्त्तव्य चेतना की भावना निहित होती है।

❖ **निम्न प्रश्नों का उत्तर 50-50 शब्दों में दें।**

11. सुकरात के ज्ञान की सद्गुण से क्या तात्पर्य है?

उत्तर– ज्ञान और सद्गुण में तादात्म का संबंध है। ज्ञान आचरण/व्यवहार से अभिव्यक्त होता है, अतः सद्गुणों का ज्ञान होने पर व्यक्ति सद्गुणी हो जायेगा।

इस उक्ति से स्पष्ट होता है कि ज्ञान और सद्गुण में अनिवार्य तथा तादात्म का संबंध है। ज्ञान हमेशा आचरण/व्यवहार से अभिव्यक्त होता है, अतः यदि व्यक्ति को सद्गुणों का ज्ञान है तो वह सद्गुण युक्त आचरण करेगा और सद्गुणी हो जायेगा। यदि कोई व्यक्ति ज्ञानी नहीं है तो वह सद्गुणी नहीं हो सकता है क्योंकि ज्ञानी तो हमेशा सदाचारी होगा। सद्गुण ज्ञान रूप है, अतः ज्ञान की तरह सद्गुण भी वस्तुनिष्ठ, अविभाज्य, शिक्षणीय, एक आनंदरूप, सामान्य बौद्धिक सुख का आधार है।

12. काण्ट के अनुसार नैतिक/सिद्धान्तों का स्वरूप क्या है? एक आलोचनात्मक विवेचन प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर–

1. **सार्वभौमिकता का नियम–** नैतिक नियमों की अनिवार्य शर्त है अर्थात् नैतिक नियम किसी की इच्छा पर निर्भर न होकर सभी पर समान रूप से लागू होते हैं।
2. **मनुष्यता को साध्य मानने का नियम–** मनुष्य साधन न होकर साध्य है अतः हमें स्वयं की तथा दूसरों की स्वतंत्रता एवम् प्रतिष्ठा का पूर्ण सम्मान करना चाहिए। इस आधार पर दासता, चौरी करना, आत्महत्या इत्यादि अनैतिक व इस नियम का स्पष्ट उल्लंघन है।
3. **स्वाधीनता का नियम–** ''इस प्रकार कर्म करो कि तुम्हारा संकल्प स्वयं को सार्वभौमिक नियमों का विधायक समझ सके।'' अतः नैतिक नियम बाह्यारोपित न होकर आत्मप्रेरित ही होता है।
4. **साध्यों के राज्य का नियम–** इस प्रकार कर्म करो कि स्वयं को 'साध्यों के राज्य का नियम' का विधायक सदस्य समझ सको। इसमें स्वयं को आदर्श समाज का सदस्य समझो जिसमें सभी मनुष्य साध्य हो। इस नियम में उपर्युक्त तीनों नियम समाहित हो जाते हैं। इसी आदर्श समाज को उन्होंने 'साध्यों का राज्य' कहा है।

हम इस आदर्श की ओर तभी अग्रसर हो सकते हैं जब हम अपने स्वाधीन संकल्प से प्रेरित होकर सदैव निरपेक्ष आदेश के अनुसार आचरण करें और सम्पूर्ण मानवता को अपने आप में साध्य मानते हुए कर्त्तव्य के लिए अपने कर्त्तव्य का पालन करें।

❖ **निम्न प्रश्नों का उत्तर 100 शब्दों में दें।**

13. संकल्प की स्वतंत्रता को परिभाषित करते हुए इसकी तीन पूर्व मान्यताएँ अथवा शर्तों को वर्णित कीजिए।

उत्तर– *सर के क्लास के माध्यम से*